International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 14-10-2022, Accepted: 30-10-2022, Published: 17-11-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 8-9

साहित्य एक सामाजिक उत्पाद है

डॉ. रुबीना सैफी
असिस्टेंट प्रोफेसर, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली, भारत

सारांश
मनुष्य के आत्मिक जीवन की अन्य अभिव्यक्तियों की तरह साहित्य की जड़ें भी समाज के भौतिक जीवन की परिस्थितियों में होती हैं। किसी भी साहित्यकार – होमर, कालिदास, शेक्सपीयर या वाल्मीकि की प्रतिभा को उनके अपने देश और मानव इतिहास के उस विशेष युग की भौतिक परिस्थितियों से काट कर नहीं देखा जा सकता, जिसमें उनका जन्म हुआ और जिसमें रह कर उन्होंने कार्य किया। कोई भी रचना किसी रचनाकार की प्रतिभा के साथ–साथ उस समाज के विकास का भी परिणाम होती है। हालांकि किसी रचनाकार की प्रतिभा भी उसके समाज के विकास की स्थितियों से प्रभावित होती है।

मूल शब्दः साहित्य और समाज, सामाजिक उत्पाद, साहित्य की सामाजिकता

प्रस्तावना

साहित्य का अस्तित्व समाज से कटा हुआ नहीं होता। साहित्य सामाजिक रचना है, साहित्यकार की रचनाशील चेतना उसके सामाजिक अस्तित्व से निर्मित होती है, साहित्यिक कर्म की पूरी प्रक्रिया सामाजिक व्यवहार का ही एक विशिष्ट रूप है [1]

मनुष्यों की चेतना उनके अस्तित्व को निर्धारित नहीं करती, बल्कि इसके विपरीत उनका सामाजिक अस्तित्व ही उनकी चेतना को निर्धारित करता है। [2]

मार्क्स का यह कथन साहित्य को समाज की उपज मानने के दर्शन के प्रस्थान बिंदु की तरह देखा जाता है। इस स्थापना के जरिये यह साफ होता है कि मनुष्य के आत्मिक जीवन की अन्य अभिव्यक्तियों की तरह साहित्य की जड़ें भी समाज के भौतिक जीवन की परिस्थितियों में होती हैं। किसी भी होमर, कालिदास, शेक्सपीयर या वाल्मीकि की प्रतिभा को उनके अपने देश और मानव इतिहास के उस विशेष युग की भौतिक परिस्थितियों से काट कर नहीं देखा जा सकता, जिसमें उनका जन्म हुआ और जिसमें रह कर उन्होंने कार्य किया। कोई भी रचना किसी रचनाकार की प्रतिभा के साथ–साथ उस समाज के विकास का भी परिणाम होती है। हालांकि किसी रचनाकार की प्रतिभा भी उसके समाज के विकास की स्थितियों से प्रभावित होती है।

साहित्य और समाज के बीच किसी रिश्ते की खोज यों तो बहुत पुरानी है। माना जाता है कि सबसे पहले प्लेटो ने साहित्य का संबंध समाज से जोड़ा था। जब उसने नकल की अवधारणा प्रस्तुत की थी।[3] हालांकि तब इस अवधारणा का व्यवस्थित अनुप्रयोग नहीं हो पाया था। अब से लगभग 200 वर्ष पहले पेरिस में मादाम दे स्टील की पुस्तक De la literature consideree dans ses rapports svec les institutions socials के सन 1800 में पेरिस में प्रकाशन को समाज और साहित्य के संबंध को देखने की शुरूआत माना जाता है। साहित्य को एक सामाजिक उत्पाद के रूप में देखने की शुरुआत कार्ल मार्क्स– फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ शुरू हुई और इस दिशा में क्रिस्टोफर कॉडवेल रैल्फ फाक्स आदि आलोचकों ने अपने अध्ययनों के जरिये इसे स्थापित करने का प्रयास किया।

कॉडवेल ने स्थापित किया कि ऐतिहासिक तौर पर साहित्य की उत्पत्ति ही सामाजिक क्रियाकलापों के दौरान हुई। उन्होंने नृजातीय अनुसंधानों के आधार पर यह लिखा है कि समस्त रमणीय उक्तियां, चाहे वे मौसम संबंधी हों या किसानों की सूक्तियां हों, मंत्र हों या धर्म की अपेक्षाकृत अधिक परिष्कृत गुढ़ोक्तियाँ सभी जातियों में थीं और एक ओज पूर्ण भाषा लिये हुए थीं, जिन्हें आत्म सचेत रूप में साहित्यिक होते गये लोगों ने साहित्य की एक विधा–कविता के रूप में मान्यता दी। कविता साहित्य की सबसे आदिम विधा है और यह समाज के विकास के साथ विकसित होती रही।

कॉडवेल के चिंतन को आधार बनाते हुए आगे कहा जा सकता है कि एक लेखक अपने अनुभव समाज से हासिल करता है। वह सब कुछ झेलता है, हर चीज का आनंद लेता है और अपने अनुभव द्वारा सबको संगठित करता है, पाठक के लिए आंतरिक अनुभूतियों और आकांक्षाओं के एक समूचे नये विश्व की उपलब्धि कराता है। वह चेतना की आवेगात्मक अंतर्वस्तु को इस तरह परिवर्तित करता है कि यह विश्व के साथ अधिक सूक्ष्मता और गहनता के साथ प्रतिक्रिया कर सके। आंतरिक यथार्थ का यह अंतर्भेदन चूंकि साहचर्य में बंधे लोगों के साथ किया जाता है और इसमें इतनी जटिलता होती है कि इसे हासिल करना एक आदमी के वश की बात नहीं होती। अतः यह उसके साथियों के ह्रदयों को भी उद्घाटित करता है और समाज की पूरी सामूहिक अनुभूति को जटिलता के नये स्तर पर पहुंचाता है।

क्रिस्टोफर कॉडवेल के अनँसार जैसे मोती सीपी की उपज होती है, उसी तरह कला समाज की उपज होती है।[4] उनका कहना था कि साहित्य भी एक सामाजिक उत्पाद होता है। अपनी बाह्यगत संरचना में और अपने आंतरिक सार दोनों में साहित्य की उत्पत्ति को समग्र रूप से समाज और उसकी व्यापक गतिविधियां ही ऐतिहासिक रूप से संभव बनाती हैं।

साहित्य में चाहे जिस भी रूप में हो, मनुष्य के जीवन का चित्रण होता है। जब हम किसी रचना में इलाज के अभाव में मरती किसी महिला को, प्यार करते किसी युवा को, एकांत में खुद से वार्तालाप कर रहे किसी चिंतक को, वसंत के आगमन को अथवा किसी युद्ध या महामारी का वर्णन पाते हैं तो हम दरअसल मनुष्य के जीवन के ही विविध रूपों से साक्षात कर रहे होते हैं। लेकिन मनुष्य के जीवन की कल्पना समाज के बिना नहीं की जा सकती। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह पशु से एक चिंतनशील प्राणी में विकसित होते हुए एक सामाजिक प्राणी के रूप में भी विकसित हो रहा था। मनुष्य में चेतना का विकास उसकी सामाजिकता के कारण ही हो सका। मार्क्स और एंगेल्स ने लिखा है:

"पशु किसी के साथ संबंध नहीं बनाता, वह किसी भी तरह का संबंध बनाता ही नहीं। पशु के लिए दूसरों के साथ उसका संबंध

संबंध के रूप में विद्यमान नहीं होता। अतएव चेतना आरंभ से ही एक सामाजिक उपज है और वह तब तक ऐसी बनी रहती है, जब तक मनुष्यों का अस्तित्व बना रहता है। [5]

साहित्य कोई न कोई भाव लिये हुए होता है। उसमें एक इतिहास दृष्टि, अपने काल की चेतना होती है। साहित्य भाषा के जरिये अभिव्यक्त होता है और ग्रहणकर्ता (पाठक) तक पहुंचता है। इनमें से किसी भी तत्व का अस्तित्व समाज के बिना संभव नहीं है।

क्रिस्टोफर कॉडवेल ने साहित्य समेत कला को अनुभूतियों का विज्ञान कहा है। मनुष्य की ये अनुभूतियां उसकी चेतना की उपज होती हैं। चेतना के निर्माण में सबसे बड़ा उपकरण है भाषा। भाषा ही हमें अपने परिवेश में मौजूद हर भौतिक वस्तु को सचेत रूप में हमें देखने में सक्षम बनाती है। मार्क्स एंगेल्स ने लिखा है कि भाषा उतनी ही पुरानी है, जितनी चेतना है। भाषा ऐसी व्यावहारिक चेतना है, जो दूसरे लोगों के लिए भी विद्यमान होती है। उनका कहना था कि चेतना की ही तरह भाषा भी आवश्यकता से दूसरे लोगों के साथ संसर्ग की अनिवार्यता से पैदा होती है। यह भाषा ही है जिसके माध्यम से साहित्य रचा जाता है संप्रेषित और प्रसारित हो पाता है। साहित्य को दूसरी कलाओं से अधिक एक सामाजिक उत्पाद के रूप में स्थापित करने में भाषा का बेहद महत्वपूर्ण योगदान है। चूंकि भाषा समाज में जन्म लेती है और हम भाषा के बिना साहित्य के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकते, यह तथ्य साहित्य की रचना में समाज की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित करता है।

भाषा हमें साहित्य की रचना के समय सत्य और सौंदर्य का मूल्यांकन करने में समर्थ बनाती है, क्योंकि सत्य यथार्थ के प्रत्यक्षबोध और साझे गोचर जगत के बीच का संबंध है। रैल्फ फॉक्स ने सत्य तक पहुंचने की क्रिया को भी सामाजिक माना है। फॉक्स का कहना है कि सत्य तक केवल क्रियाशीलता द्वारा पहुंचा जा सकता है, कारण कि सत्य मानव की उस गहरी खोजबीन की अभिव्यक्ति है, जो कि वह किसी वस्तु के बारे में करता है और यह खोजबीन मुख्यतः एक मानवीय क्रिया है, विशेष रूप से एक सामाजिक और उत्पादक क्रिया है।[6]

साहित्य लेखक द्वारा रचा जाता है। जो अंतर्विरोध इसको जन्म देता है, वह एक विशेष प्रकार का अंतर्विरोध है, जो समाज को परिचालित करता है और जिसका सामना लोगों के वास्तविक जीवन और वास्तविक चेतना में किया जाता है। यह मनुष्य की लालसा और प्रकृति की अनिवार्यता के बीच का अंतर्विरोध है। एक लेखक की अपनी खास चेतना होती है, जो उसे समाज से मिलती है। लेखक को लगता है कि उसने कुछ ऐसा व्यक्तिगत तौर पर महसूस किया है जो साहित्य के सामाजिक जगत में नहीं है, मगर जो होना चाहिए। इसलिए वह रचना के लिए उन्मुख होता है। साहित्य रच कर साहित्यकार सामाजिक चेतना में हस्तक्षेप करता है, उसे विकसित करता है। ऐसा वह तभी कर सकता है, जब वह खुद उस सामाजिक चेतना के एक अंश का प्रतिनिधित्व न करता हो।

इस तरह हम देखते हैं कि एक साहित्यकार अपने लेखन के लिए मनुष्य और समाज को विषय बनाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते अपनी गतिविधियों और अपने चिंतन के जरिये लेखक को उसके लेखन के लिए विषय उपलब्ध कराता है। साहित्यकार जिस भाषा का उपयोग साहित्य रचना के लिए करता है, वह भी सामाजिक व्यवहार और कार्यकलाप की उपज होती है। ये सारे तथ्य साहित्य को एक सामाजिक उत्पाद के रूप में स्थापित करते हैं।

संदर्भ सूची

1. पांडेय, मैनेजर, साहित्य और इतिहास दृष्टि, वाणी प्रकाशन, 2009, पृष्ठ–अपप
2. मार्क्स तथा एंगेल्स, साहित्य तथा कला, प्रगति प्रकाशन, मास्को, 1981 पृष्ठरू47
3. उद्धत, अल्ब्रेख्त, मिल्टन सी, द रिलेशन ऑफ लिटरेचर एंड सोसाइटी, द अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, मार्च, 1954, पृष्ठ – 425
4. कॉडवेल, क्रिस्टोफर, विभ्रम और यथार्थ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1998, पृष्ठ – 11
5. मार्क्स तथा एंगेल्स, साहित्य तथा कला, प्रगति प्रकाशन, मास्को, 1981 पृष्ठरू 151–152
6. फॉक्स, रैल्फ, उपन्यास और लोकजीवन, अनु: रामविलास शर्मा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 1980, पृष्ठ – 30